आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-31, अंक-8 अगस्त, 2017

इस अंक में

- आई सी एम आर मुख्यालय में 71वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन 57
- भारत में स्वास्थ्य और अनुसंधान की ताजा स्थिति 58
- कोलकाता में आयोजित प्रदर्शनी में आई सी एम आर की भागीदारी 63
- कोलकाता में आयोजित 21वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी में आई सी एम आर की भागीदारी 64
- आई सी एम आर, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा इंटरनेशनल वैक्सीन इंस्टीट्यूट के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर 65
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 65
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी 66
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 66

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **डॉ सौम्या स्वामीनाथन**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ संजय एम. मेहेन्दले**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

आई सी एम आर मुख्यालय में 71वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

दिनांक 15 अगस्त, 2017 को नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में भारत के 71वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का हर्षोल्लास के साथ आयोजन किया गया। सर्वप्रथम परिषद मुख्यालय के प्रांगण में प्रातः 11 बजे स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार की सचिव एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) की महानिदेशक माननीय डॉ सौम्या स्वामीनाथन ने ध्वजारोहण किया और इस अवसर पर उपस्थित वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मिलकर राष्ट्रगान का गायन किया।

महानिदेशक द्वारा ध्वजारोहण

माननीय सचिव एवं महानिदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में आई सी एम आर मुख्यालय के साथ–साथ देश भर में फैले इसके संस्थानों से जुड़े वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को भारत के 71वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। उन्होंने लाल किले की प्राचीर से भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सम्बोधन में वर्ष 2022 तक हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का उद्धरण व्यक्त किया। माननीय प्रधान मंत्री ने अपने सम्बोधन में कहा है कि ''वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरुआत करने के पश्चात 5 वर्ष के भीतर वर्ष 1947 में भारत देश को स्वतंत्रता प्राप्त हो गईं, हमें भी आगामी 5 वर्ष के लिए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का संकल्प लेना चाहिए।''

माननीय महानिदेशक महोदया ने आई सी एम आर में डिजिटल मीडिया के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि वित्त एवं लेखा अनुभागों में डिजिटल माध्यम का प्रयोग संतोषजनक है परन्तु प्रशासनिक अनुभागों में इसे और गति देने की आवश्यकता पर बल दिया। इससे न केवल समय की बचत होगी, पेपर का प्रयोग कम होगा बल्कि हमारी कार्य प्रणाली में पारदर्शिता भी सुनिश्चित होगी। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे शोध से मिले परिणामों से भारत वर्ष का जनसामान्य लाभान्वित हो। महानिदेशक महोदया ने आई सी एम आर के वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि देश में व्याप्त अनेक संचारी एवं असंचारी रोगों पर शोध कार्य एक निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत पूरा करें। उन्होंने आई सी एम आर द्वारा संपन्न शोध कार्यो से मिले परिणामों को जन–सामान्य तक पहुंचाने के लिए प्रिंट मीडिया के साथ–साथ सोशल एवं डिजिटल मीडिया के व्यापक प्रयोग पर भी जोर दिया। महानिदेशक महोदया ने यह भी आह्वान किया कि हम सभी को मिलकर पूर्ण दक्षता के साथ कार्य करना आवश्यक है।

अंत में, माननीय सचिव एवं महानिदेशक डॉ स्वामीनाथन ने एक बार पुनः आई सी एम आर मुख्यालय के साथ–साथ इसके संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारत के 71वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दीं।

भारत में स्वास्थ्य और अनुसंधान की ताजा स्थिति

किसी देश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति का आकलन उसके मेडिकल कॉलेजों, शोध संस्थानों द्वारा प्रतिष्ठित जर्नल्स में प्रकाशित शोध पत्रों की संख्या पर आधारित होता है। देश में क्षयरोग यानि टी बी, मलेरिया, फाइलेरिया रोग, कालाजार, मधुमेह, कुपोषण, हृदयघात, आदि जैसी स्थितियां स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रमुख चुनौतियां हैं।

प्रस्तुत आलेख मुम्बई स्थित *'स्पेण्डिंग ऐण्ड पॉलिसी रिसर्च फाउण्डेशन'* से संबद्ध सुश्री श्रेया शाह द्वारा भारत में स्वास्थ्य और अनुसंधान की ताजा स्थिति, देश में रोगभार में बदलाव, स्वास्थ्य आंकड़ों की गुणवत्ता, आदि विषयों पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अन्तर्गत स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार की सचिव एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन के साथ किए गए साक्षात्कार पर आधारित है।

सुश्री श्रेया शाह : भारत द्वारा वर्ष 2005 और वर्ष 2014 के बीच प्रकाशित मेडिकल शोध पत्रों का वर्ष 2016 में किए गए विश्लेषण के अनुसार केवल 25 (4.3%) मेडिकल संस्थानों द्वारा एक वर्ष में 100 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए गए। देश के पूर्ण शोध कार्य में उनका 40.3 प्रतिशत योगदान था। लगभग 332 (57.3%) मेडिकल कॉलेजों ने इस अवधि के दौरान एक भी शोध पत्र प्रकाशित नहीं किया। भारतवर्ष में मेडिकल रिसर्च की स्थिति पर आपकी क्या टिप्पणी है?

डॉ सौम्या स्वामीनाथन : यह वास्तव में चिन्ता का एक विषय है, क्योंकि शासन द्वारा स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग *(डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च)* और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) को सौपे गए कार्यों में एक कार्य देश में स्वास्थ्य अनुसंधान की क्षमता का निर्माण करना है। विश्लेषण से पता चलता है कि इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति संतोषजनक नहीं है। देश के केवल कुछ ही मेडिकल कॉलेज शोध संस्कृति को प्रोत्साहन और बढ़ावा देते हैं, और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि आने वाले वर्षों में अधिक से अधिक मेडिकल कॉलेज और मेडिकल कॉलेजों के शिक्षकगण शोधकार्य से जुड़ें।

विजन 2030 नामक हमारी नवीन नीति के प्रथम पांच स्तम्भों के अंतर्गत अनेक योजनाओं के माध्यम से देश में जैवआयुर्विज्ञान और स्वास्थ्य अनुसंधान क्षमता को सुदृढ़ बनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत शोध के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं, लोगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है और लोगों को शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। मेरा मानना है कि अधिक से अधिक मेडिकल छात्रों को उनके स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में शोधकार्य के प्रति रुचि पैदा करना एक चुनौती है। फिर भी, हमारे पास कुछ प्रतिभावान मेडिकल शोधकर्ता हैं और नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सेंट जोंस, मेडिकल कॉलेज, बैंगलोर, क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर जैसे कुछ 10 शीर्ष संस्थानों में उच्च कोटि के शोध कार्य किए जा रहे हैं।

सुश्री शाह : देश में अनुसंधान को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है और उसे बेहतर बनाया जा सकता है?

डॉ स्वामीनाथन : मेरा मानना है कि हमें सम्पूर्ण इको–प्रणाली को देखने की आवश्यकता है। केवल प्रशिक्षण प्रदान करने और संवेदीकृत करने से ही अधिक लोगों को शोध कार्य से जोड़ा नहीं जा सकता है। आई सी एम आर द्वारा 10 वर्ष पूर्व *'शॉर्ट टर्म स्टूडेण्टशिप'* नामक एक योजना की शुरुआत की गई। यह योजना मुख्यतया मेडिकल छात्रों के लिए है जो अपने संस्थान अथवा अन्य संस्थान के किसी फैकल्टी के मार्गदर्शन में शोध कार्य करने हेतु शोध प्रस्ताव प्रेषित कर सकते हैं। वे अपने अवकाश के दिनों में शोध कार्य करते हैं। जिन्हें 10,000 रुपए की राशि प्रदान की जाती है। इन वर्षों में इस योजना की मांग बहुत अधिक बढ़ गई है। वर्तमान में प्रत्येक वर्ष हमें 7,000–8,000 आवेदन प्राप्त होते हैं और हम 1000 मेडिकल छात्रों को *'शॉर्ट टर्म स्टूडेण्टशिप फेलोशिप'* प्रदान करते हैं। हमने इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित सर्वोत्तम शोध पत्रों को पुरस्कृत करने की भी शुरुआत की है।

जब भी हमें देश के मेडिकल छात्रों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है तो डेंटल (दन्तविज्ञान) और फिजियोथिरैपी विषयों के छात्रों द्वारा भारी मांग की जाती है कि उन्हें भी *शॉर्ट टर्म स्टूडेण्टशिप फेलोशिप* के लिए अवसर मिलना चाहिए। मेडिकल

कॉलेजों के लिए भी यह गौरव का विषय होता है, वे कहते हैं कि इस वर्ष हमारे 8 छात्रों को अथवा पिछले वर्ष 10 छात्रों को *शॉर्ट टर्म स्टूडेन्टशिप फेलोशिप* प्राप्त हुई। अतः, मेडिकल छात्रों के साथ इसकी शुरुआत की गई है।

हम एम डी छात्रों को थीसिस (शोध प्रबंध) के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। इनका चयन एक विशेषज्ञ समिति द्वारा किया जाता है। शीर्ष 10 थीसिस को लगभग 50,000 रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है जो थीसिस लिखने, उसे शोध पत्र के रूप में प्रकाशित करने में सहायक होती है। मुझे लगता है हमें इस प्रकार की और योजनाओं की आवश्यकता है।

हमें अपने परिवेश को अनुसंधान के प्रति अनुकूल बनाने की आवश्यकता है। यदि आप किसी ऐसे संस्थान अथवा मेडिकल कॉलेज में कार्य कर रहे हैं जहां सुविधाओं का सर्वथा अभाव है, तो आपके पास शोध कार्य के लिए नवीन विचारों, लक्ष्यों की उपस्थिति में भी कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। शोध कार्य किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता। शोध परियोजनाओं के संचालन के लिए मूलभूत प्रयोगशाला सहायता और एक दल (टीम) की आवश्यकता होती है। जितना अधिक बहुविषयक दल होगा उतना बेहतर शोध कार्य होगा। अतः, आपको प्रयोगशाला वैज्ञानिकों, फील्ड कार्यकर्ताओं, सांख्यिकीविदों और सामाजिक वैज्ञानिकों की आवश्यकता होती है। एक नियमित मेडिकल कॉलेज में ये सुविधाएं उपलब्ध नहीं होतीं, यद्यपि, कुछ फैकल्टी शोध कार्य करना चाहते हैं, परन्तु हतोत्साहित होकर शोध कार्य करने का विचार त्याग देते हैं।

डॉ सौम्या स्वामीनाथन, सचिव, डी एच आर एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) में *'मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च यूनिट'* नामक एक योजना है जिसके द्वारा शासकीय मेडिकल कॉलेजों में उच्च दर्जे की प्रयोगशाला विकसित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कई राज्यों में मेडिकल कॉलेजों में फैकल्टी द्वारा प्राइवेट प्रैक्टिस किए जाने की मंजूरी प्राप्त है जो शोध कार्य के प्रोत्साहन में एक बहुत बड़ा बाधक है। क्योंकि वे मेडिकल कॉलेज का कार्य पूरा करके अपनी निजी क्लीनिक में मरीजों का इलाज करने चले जाते हैं। शोध कार्य के लिए आपको कार्य अवधि से अधिक एवं अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है, आपको बहुत सोचना पड़ता है, बहुत कार्य करना पड़ता है, आपको फील्ड में जाना पड़ता है। यदि, फैकल्टी द्वारा निजी प्रैक्टिस पर प्रतिबंध लगाया जाए तो वे सभी समय केवल अपने क्षेत्र के विषय में सोचते हैं जिससे वे शोध कार्य से जुड़ सकेंगे। मार्गदर्शन और आदर्श व्यक्तियों की आवश्यकता दूसरा बड़ा पहलू है। यदि आप कभी भी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिले हैं अथवा उसके साथ संवाद नहीं किए हैं जिसने शोध कार्य किया हो तो बहुत संभावना है कि आप शोध कार्य नहीं करेंगे। हम लोग एक नवीन मेंटरशिप कार्यक्रम की शुरुआत करने जा रहे हैं जिसके अंतर्गत युवा फैकल्टी भारत और विदेश दोनों स्थानों के ऐसे अनुभवी शोधकर्ताओं से जुड़ जाएंगे जो युवा शोधकर्ताओं को मार्गदर्शन देने और सहायता प्रदान करने के लिए कुछ समय देने को इच्छुक हैं।

भारत में एक अन्य समस्या यह है कि पारस्परिक सहयोग के साथ और सामूहिक रूप में कार्य करने की प्रवृत्ति की कमी है, इस समस्या को दूर करने की आवश्यकता है। द्वितीय हमारे वैज्ञानिक संस्थानों में वरीयता क्रम को ही महत्व देने की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। चूंकि आप संस्थान के निदेशक हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं कि आपको सभी विषयों से संबंधित सभी जानकारी है, आप केवल एक क्षेत्र के विशेषज्ञ हो सकते हैं। इसलिए, आपको खुले विचारों का होना चाहिए और अपने युवा वैज्ञानिकों को अन्य क्षेत्रों में कार्य करने को प्रोत्साहित करना चाहिए और संभवतः वे उस क्षेत्र में विश्व स्तरीय विशेषज्ञ बन सकते हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिकों को यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि कुछ जूनियर वैज्ञानिक उत्कृष्ट कार्य करेंगे, प्रतिभाशाली बनेंगे, अतः, उन्हें और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, न कि उन्हें दबाया जाए। सफलता प्राप्त करने के लिए आपको सहयोग करने की आवश्यकता है, आपको एक टीम बनानी पड़ेगी। यदि आप *साइंस* अथवा *नेचर टुडे* जैसे जर्नल्स में शीर्ष शोध पत्रों को देखें तो कभी–कभी आपको 100 सहलेखक मिल जाएंगे। आज वैज्ञानिक विषय इतने विकसित हो गए हैं कि आप एक क्षेत्र में महत्वपूर्ण विशेषज्ञ बन जाते हैं, और इसलिए आपको अन्य क्षेत्रों से जुड़े लोगों की आवश्यकता होती है। मॉडेलिंग एक उत्तम उदाहरण है, आप एक चिकित्सक हो सकते हैं। एक सांख्यिकीविद् भी हो सकते हैं, परन्तु यदि आप मॉडलिंग विधि प्रयोग करने में पारंगत नहीं हैं तो आपको किसी ऐसे गणितज्ञ से सहयोग करने की आवश्यकता होगी जो एक बढ़िया मॉडेल विकसित करने में सक्षम एक उत्तम मॉडेलर भी हो।

सुश्री शाह : क्या भारत में शोध कार्य आंकड़ों की गुणवत्ता और समय सीमा के द्वारा सीमित है?

डॉ स्वामीनाथन : यह एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि हमारे देश में आंकड़ों के अनेक स्रोत हैं, और कभी–कभी वे आंकड़े अन्य की तुलना में लोगों के पास अधिक उपलब्ध होते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (*नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे* NFHS) आंकड़ों का एक बढ़िया उदाहरण है जिसे एक बार तैयार हो जाने के बाद

उसके द्वितीयक विश्लेषण और भावी प्रयोग हेतु देश और विदेश में स्थित शोधकर्ताओं को उपलब्ध कराया जाता है। यह एक उत्तम प्रचलन है, परन्तु कई अन्य आंकड़े हैं जो उपलब्ध नहीं हैं, और कई अलग–अलग एजेंसियां एक ही विषय में आंकड़े एकत्र करती हैं। जिन्हें बहुधा मिलाया नहीं जाता।

आंकड़ों का भण्डारण भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की नवीन शोध नीति का एक स्तम्भ है। हमें देश के स्वास्थ्य संबंधी सभी आंकड़ों, विशेषतया जिन्हें सार्वजनिक फण्ड्स से एकत्र किया जाता है, का एक डाटा वेयरहाउस तैयार करना है। आई सी एम आर में अब प्रयोगशालाओं का नेटवर्क है जिसके द्वारा डेंगी जैसे रोगवाहक जनित रोगों पर आंकड़े एकत्र किए जाते हैं। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एन सी डी सी) में आई डी एस पी (एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम) प्रयोगशालाओं का अपना नेटवर्क है, जबकि कुछ अन्य एजेंसियां, जैसे कि संयुक्त राज्य स्थित रोग नियंत्रण केन्द्र (सी डी सी), द्वारा शोध परियोजनाओं को सहायता प्रदान की जाती है। उनकी अपनी भी प्रयोगशालाएं हैं। जब तक हम सभी अपने आंकड़े एकीकृत नहीं करते, हम किसी विशेष वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर डेंगी के आंकड़े देख नहीं सकेंगे।

इसी प्रकार, एंटीमाइक्रोबियल दवाइयों के प्रति प्रतिरोध के लिए सभी प्रयोगशालाओं को चाहिए कि वे अपने आंकड़े एक सामूहिक स्रोत अथवा प्लेटफॉर्म पर रिपोर्ट करना शुरू करें। वह एकदम पारदर्शी होना चाहिए, जो न केवल वैज्ञानिकों बल्कि सामान्य जन को भी उपलब्ध हो। हम उसी दिशा में बढ़ रहे हैं, तात्पर्य यह कि आई सी एम आर के माध्यम से जिस भी शोधकार्य के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं, उनसे प्राप्त आंकड़े हमारे पास आने चाहिए जिसे जन सामान्य के डाटाबेस में रखा जाए और वह जन साधारण को भी उपलब्ध हो। इसका तात्पर्य यह है कि यदि कोई उसका उपयोग करना चाहे तो उसके लिए एक प्रणाली होनी चाहिए जिसके द्वारा वे आंकड़े उन्हें उपलब्ध कराया जा सके। मेरा मानना है कि हमारे पास बहुत आंकड़े उपलब्ध हैं जिनका भारत वर्ष में पूरी तरह उपयोग किया जा रहा है। अब सरकार का भी मानना है कि हम लोग उस दिशा में कार्य करें कि किस प्रकार उन आंकड़ों का उपयोग किया जा सकता है और उसे ऐसे रूप में तैयार करें जिसे अन्य प्रयोग कर सकें।

अब अनेक घटनाएं घट रही हैं। हम लोग *सैम्पल रजिस्ट्रेशन सर्वे* (एस आर एस) के आंकड़ों का उपयोग करने के लिए भारत के महापंजीयक (*रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया,* एस आर एस) के साथ, तथा राज्य स्तर पर रोग भार का आकलन करने के लिए *सिएटल स्थित इंटरनेशनल हेल्थ मैट्रिक्स इवैल्युएशन इंस्टीट्यूट* के अंतर्गत वैश्विक रोग भार समूह (*ग्लोबल बर्डेन ऑफ डिजीज,* जी बी डी ग्रुप) के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ष जी बी डी समूह द्वारा विश्व में रोग भार की उपस्थिति की ताजा जानकारी दी जाती है, इस प्रकार भारत की स्थिति वहां उपलब्ध होती है। परन्तु हम जानते हैं कि हमारे लिए एक डाटासेट के रूप में भारत के आंकड़े उतने सार्थक नहीं हैं, क्योंकि भारत के राज्यों के बीच अत्यन्त विविधताएं हैं। राज्यों के सचिव यह जानना चाहते हैं कि उनके राज्य की क्या स्थिति है? जिसके आधार पर अपनी नीतियां रूपांतरित कर सकें। आशा है, इस वर्ष के अंत तक राज्य स्तर के रोग भार आकलन पर हम प्रथम रिपोर्ट प्रस्तुत कर देंगे। उसके पश्चात प्रत्येक वर्ष उसे अद्यतन करते रहेंगे।

सुश्री शाह : वर्ष 2015 तक मृत्यु के कारण पर भारत के 90 प्रतिशत आंकड़े अशुद्ध, अपूर्ण अथवा अप्राप्य थे, इस प्रकार सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए इसकी उपयोगिता घट रही है। इसे बदलने के लिए तथा भारत के रोग भार की एक पूरी तस्वीर देने के लिए क्या किया जा सकता है?

डॉ स्वामीनाथन : यह एक बहुत बड़ी कमी है, और इसे हमें दो तरह से सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। प्रथम, अस्पताल में होने वाली मौतें उपयुक्त तरीके से प्रमाणित किए जाने की आवश्यकता है। इसका तात्पर्य यह है कि चिकित्सकों को मेडिकल मृत्यु प्रमाणन पर प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। हमें यह प्रशिक्षण अण्डर ग्रेजुएट (एम बी बी एस), स्नातकोत्तर (एम डी) के दौरान नहीं दिया जाता है। यदि कोई चिकित्सक मृत्यु के कारण के रूप में "हृदय कार्य बन्द होना अर्थात *कार्डियक अरेस्ट* लिखता है तो उससे कोई मदद नहीं मिलती। द्वितीय, हमें ऐसे लोगों की मृत्यु के कारणों को ज्ञात करने की आवश्यकता है जिनकी मृत्यु घर पर होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश मौतें घरों में होती हैं। हमें एक अन्य प्रणाली की आवश्यकता है जिसके अन्तर्गत ए एन एम अथवा कोई अन्य जैसा स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता घरों पर जाकर मौखिक रूप से मृत्यु के कारण का पता लगाए। उसके पश्चात प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का चिकित्सक द्वारा उपलब्ध विस्तृत जानकारी के आधार पर मृत्यु के कारण को प्रमाणित किए जाने की आवश्यकता है। इसके बिना मृत्यु के कारण पर बेहतर आंकड़े नहीं प्राप्त कर पाएंगे, और इसके लिए हमें सर्वेक्षणों और अन्य अप्रत्यक्ष तरीकों पर निरन्तर निर्भर रहना पड़ेगा।

हमें सभी विकसित देशों की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है जहां एक महत्वपूर्ण पंजीकरण प्रणाली मौजूद है जिसके अन्तर्गत मृत्यु के कारण को सावधानीपूर्वक दर्ज किया जाता है।

सुश्री शाह : भारत में आयुर्विज्ञान अनुसंधान किस प्रकार स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने में सहायक हो सकता है? उदाहरण के तौर पर वर्ष 2015 में विश्व में क्षयरोग (टी बी) के कुल 27 प्रतिशत (2.8 मिलियन) रोगी भारत के थे। वर्ष 2015–16 के दौरान विश्व में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में अतिसार और न्युमोनिया के कारण होने वाली 5 प्रतिशत मौतें भारत में हुईं, वर्ष 2015 में 11 लाख लोग मलेरिया से प्रभावित हुए।

डॉ स्वामीनाथन : हमारी नीति का तीसरा स्तम्भ प्रमाण से पॉलिसी का निर्माण और चौथा स्तम्भ अनुसंधान परिणामों का कार्यान्वयन है। इन दोनों स्तम्भों का उद्देश्य मुख्यतया जानकारी में कमी को

दूर करना है और यह सुनिश्चित करना है कि शोध कार्य से प्राप्त परिणामों के प्रमाण को नीति तैयार करने में सम्मिलित किया जाए।

हमारे शोधकार्य उन रोगों पर विशेष रूप से केन्द्रित हैं जिन्हें समाप्त किया जाना है। हम कालाजार, फाइलेरिया रोग, खसरा (मीज़ेल्स) और क्षयरोग पर स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। हमारा कार्य जानकारी में कमियों की पहचान करना है और उन कमियों को दूर करने के लिए साधनों को विकसित करने का प्रयास करना है। यह अन्तर रोग की वास्तविक स्थिति पर जानकारी नहीं होना हो सकता है। यदि आपको देश में क्षयरोग (टी बी) की वास्तविक व्यापकता पर जानकारी नहीं है तो प्रगति को आंकना कठिन है। अतः, उसका पता लगाने के लिए हम एक सर्वेक्षण कर सकते हैं।

दूसरा एक उत्तम नैदानिक परीक्षण हो सकता है जिसे फील्ड में रोग की जांच करने में प्रयोग किया जा सके। उदाहरण के तौर पर, मलेरिया और कालाजार की जांच के लिए हमारे पास त्वरित नैदानिक परीक्षण युक्तियां हैं, परन्तु क्षयरोग यानि टी बी के लिए अभी तक ऐसी कोई युक्ति उपलब्ध नहीं हो पाई है।

इसी प्रकार, कालाज़ार के लिए हमें एक महीने तक इंजेक्शन द्वारा इलाज कराना पड़ता था, उसके पश्चात एक माह की अवधि तक मुखीय विधि द्वारा दवाइयों से इलाज किया जाने लगा, अब एक एकल खुराक के साथ इलाज उपलब्ध है जो आई सी एम आर के साथ–साथ अन्य संस्थानों पर किए गए चिकित्सीय परीक्षणों का परिणाम है। मधुमेह के लिए अनेक चिकित्सीय परीक्षणों पर हमारी नजर है, मधुमेह पूर्व स्थिति से मधुमेह विकसित होने की प्रक्रिया को धीमी करने के लिए योग और अन्य आयुर्वेदिक दवाइयों पर भी नजर है।

हम मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कई परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं। इस वर्ष हमने एक नए कार्यक्रम की शुरुआत की है जिसका उद्देश्य यह देखना है कि कितनी अच्छी तरह हम जिला स्तर पर कार्यक्रम को कार्यान्वित कर सकते हैं, क्योंकि राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को संसद द्वारा मंजूरी प्राप्त हुई परन्तु इस नीति के कार्यान्वयन में अनेक नवाचारों की आवश्यकता होती है। यह स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान है। हम स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान के अन्तर्गत मौलिक विज्ञान से लेकर नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास, नई वैक्सीनों जैसे सभी क्षेत्रों को सहायता प्रदान करते हैं। इस वर्ष हमने निजी क्षेत्र को भी सम्मिलित करने की शुरुआत कर दी है, क्योंकि, उसके बिना हम लोग अधिक प्रगति नहीं कर सकते, विशेषतया औषधियों एवं वैक्सीन के क्षेत्रों में हमने पहले ही कई कम्पनियों के साथ भागीदारी की है जिससे वे किसी वैज्ञानिक द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी को उद्योगों तक हस्तांतरित करने के लिए मिलकर साथ कर सकें, जिससे वे किट्स बाजार में उपलब्ध हो सकें। उनके द्वारा विकसित उत्पाद का मूल्यांकन करना भी एक तरह का सहयोग है। हम उनके उत्पाद का फील्ड में परीक्षण कर सकते हैं अथवा क्लीनिकल परीक्षण कर सकते हैं।

तीसरा हम मिलकर परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं जैसे कि मध्य प्रदेश के मांडला जिले में मलेरिया समाप्त करने के लिए सनफार्मा के साथ मिलकर कार्य किया है। वह एक पब्लिक प्राइवेट भागीदारी है जहां हम तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करते हैं, वे वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं और राज्य सरकारें अपना कार्यबल के साथ–साथ औषधियां एवं बेड नेट्स प्रदान करते हैं।

सुश्री शाह : भारत ने कालाजार नामक एक उपेक्षित उष्ण कटिबंधीय रोग का सामना करने, निर्धन बच्चों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले याज नामक एक चिरकारी त्वचा रोग को समाप्त करने, तथा लसीका फाइलेरिया रोग का इलाज करने में प्रगति की है। किस प्रकार शोध कार्य अन्य नियंत्रण कार्यक्रमों को सहायता प्रदान कर सकता है?

डॉ स्वामीनाथन : मेरा मानना है कि शोध कार्य न केवल कार्यक्रम नीतियों को विकसित करने में बल्कि उनका मूल्यांकन करने और समय–समय पर उन्हें रूपान्तरित करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे कि हमें कौन सा कीटनाशी (इनसेक्टीसाइड) प्रयोग करना चाहिए, जब तक यह ज्ञात नहीं हो कि क्या रोगवाहक में प्रतिरोध विकसित हो रहा है अथवा नहीं, कीटनाशी का स्प्रे कब किया जाए, कितनी मात्रा में स्प्रे किया जाए, ये सभी जानकारियां शोध अध्ययनों के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती हैं। एक लम्बे समय से हम लोग मच्छरों के लिए क्लोरोक्वीन का प्रयोग कर रहे हैं। यह शोध के द्वारा ही पता चला कि सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में मलेरिया के लिए जिम्मेदार परजीवी *प्लाज़्मोडियम फाल्सीपेरम* में क्लोरोक्वीन के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न हो गया था। हमने पूर्वोत्तर के लिए आर्टीसुनेट आधारित एक संयुक्त चिकित्सा के रूप में राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन किया। उसकी मॉनीटरिंग यह सुनिश्चित के लिए निरन्तर जारी रहेगी कि वे दवाइयां अभी भी कार्य कर रही हैं।

निगरानी रखना और फीडबैक प्राप्त करना एक पहलू है, परन्तु नई नीतियां विकसित करना दूसरा पहलू है। उदाहरण के तौर पर, सरकार ने कैंसर, मधुमेह और आघात के निवारण और नियंत्रण के लिए इस राष्ट्रीय कार्यक्रम की शुरुआत की है। इसे जमीनी तौर पर किस प्रकार लागू किया जाएगा? कैंसर की जांच के लिए हम कौन सा उत्तम तरीका अपना सकते हैं? किस आयु वर्ग में इसकी जांच की जानी चाहिए? स्तन कैंसर, सरवाइकल (गर्भाशय ग्रीवा) कैंसर के लिए कौन सी टेक्नोलॉजी की जानी चाहिए? स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण नवीन पहल है, हम इसे *मेडिकल टेक्नोलॉजी एसेस्मेंट* बोर्ड कहते हैं। इसे हमने स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (*डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च*) के अन्तर्गत सार्वजनिक स्वास्थ्य विस्तार से संबंधित प्रश्नों पर नजर रखने के लिए स्थापित किया है। आप स्वास्थ्य विस्तार (*हेल्थ कवरेज*) को किस प्रकार पारिभाषित करेंगे और उसके अंतर्गत क्या–क्या और सम्मिलित किया जा सकता है, क्योंकि एक रोगी के लिए उसका इलाज महत्वपूर्ण है। उस पर 1 करोड़ रुपए का भी व्यय होने पर रोगी कहेगा कि आप हमें चिकित्सा उपलब्ध कराएं, चाहे यह

एक दुर्लभ कैंसर है अथवा एक दुर्लभ आनुवंशिक रोग है। परन्तु सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत मूल्य प्रभावकारिता के साथ–साथ समानता जैसे विभिन्न पहलुओं पर नजर रखी जाती है। आप 10 करोड़ रुपए तीन लोगों के इलाज पर व्यय कर सकते हैं, अथवा आप एक हजार लोगों का इलाज कर सकते हैं।

हमारा कार्य एक पक्षपात रहित, पारदर्शी और प्रमाण–आधारित प्रयास अपनाना है, अतः, इस बोर्ड में वास्तविक रूप से ऐसे लोग सम्मिलित होने चाहिए जो निहित स्वार्थ, पारस्परिक विवादों, आदि से परे हों। ऐसा ब्रिटेन में किया गया, जहां नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ और केयर एक्सीलेंस तथा थाईलैण्ड में *हेल्थ इंटरवेंशन ऐण्ड टेक्नोलॉजी असेस्मेंट प्रोग्राम* (एच आई टी ए पी) नामक दो सफल कार्यक्रम हैं। हम एच आई टी ए पी के सहयोग में कार्य कर रहे हैं, जो हमारे कार्यक्रम के अनुरूप है, और एक स्वतंत्र संस्था है जिसकी सिफारिशें थाईलैण्ड सरकार द्वारा सामान्य रूप से स्वीकार्य होती हैं।

सुश्री शाह : हमने देखा है कि भारत में रोगभार की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। *ग्लोबल बर्डेन ऑफ डिसीज* (GDB) द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार भारत में वर्ष 2005 और 2015 के बीच मधुमेह के कारण होने वाली मौतें 50 प्रतिशत बढ़ गई हैं। जो अब देश में मृत्यु के प्रमुख कारणों में सातवें स्थान पर है, जो वर्ष 2005 में 11वें स्थान पर था। क्या आई सी एम आर द्वारा यह ज्ञात करने के लिए कोई शोध कार्य किया गया है कि अन्य आबादियों की तुलना में भारतीयों को मधुमेह और हृद्वाहिकीय रोग विकसित होने का उच्च खतरा क्यों है?

डॉ स्वामीनाथन : आज ये असंचारी रोग हैं। भारत में हृद्वाहिकीय रोग और स्ट्रोक अर्थात आघात (दौरा पड़ना) मृत्यु के लिए जिम्मेदार दो शीर्ष कारण हैं। इनके लिए जिम्मेदार खतरे वाले कारकों में हाइपरटेंशन (उच्च रक्त चाप), मधुमेह, अशुद्ध वायु, घर के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर वायु प्रदूषण के साथ–साथ धूम्रपान, मोटापा, पोषणज आहारीय अल्पता जैसी अन्य स्थितियां सम्मिलित हैं। वर्ष 1990 में असुरक्षित पेयजल और पोषण संबंधी विकार जैसी समस्याएं शीर्ष के दो संभावित खतरों के रूप में पाई गईं। आज देश में हाइपरटेंशन और मधुमेह की उपस्थिति दो शीर्ष विकारों में सम्मिलित हैं। अब हमें स्वयं से पूछना है कि यह बदलाव क्यों हो रहा है?

इसके कई कारण हैं। प्रथम – हमारी जनसांख्यिकी में बदलाव आ रहा है। जैसे–जैसे आपकी आयु बढ़ती है संचारी रोगों की उपस्थिति बढ़ जाएगी। द्वितीय – बेहतर टीकाकरण और चिकित्सा तथा एंटीबायोटिक दवाइयों की बेहतर उपलब्धता के कारण संक्रामक रोग की घटनाएं घट रही हैं। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के चलते मातृ और शिशु मर्त्यता घटती जा रही है और जैसे कि हम एक के बाद एक संक्रामक रोग को दूर भगाते जा रहे हैं अथवा उन पर काबू पाने में सक्षम हैं, उनमें और कमी आने की संभावना है। इसी दौरान आबादी में वृद्धों की संख्या बढ़ती जा रही है। तीसरा कारण हमारी जीवन शैली में बदलाव आना है। हम सभी जानते हैं कि 25 वर्षों में भारत में तेजी से शहरीकरण हुआ है, लोगों में अधिक सम्पन्नता आई है, शारीरिक क्रियाशीलता घटी है, आहार में बदलाव आया है। हम लोग घर का ताजा पकाया हुआ खाना नहीं खा रहे हैं। हम लोग बड़ी मात्रा में बाहर निर्मित और प्रसंस्कृत भोजन का सेवन कर रहे हैं जिसमें चीनी, नमक और वसा की मात्रा अधिक होती है। पर्यावरणी प्रदूषण एक अन्य कारक है। भारत में ठोर्स इंधन के प्रयोग के कारण घरों के अंदर वायु प्रदूषण का दोहरा भार है, जिसमें आज सौभाग्यवश एल पी जी के अधिक प्रयोग के कारण तेजी से गिरावट आ रही है । परन्तु, शहरों में पर्यावरणी प्रदूषण एक विशाल खतरा बनता जा रहा है। इन संभावित खतरे वाले कारकों के परिणामस्वरूप हृद्वाहिकीय (कार्डियोवैस्कुलर) और प्रमस्तिष्क वाहिकीय (सेरीब्रोवैस्कुलर) रोगों की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

सुश्री शाह : भारत में असंचारी रोगों से निपटने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं?

डॉ स्वामीनाथन : असंचारी रोगों पर काबू पाने के लिए भिन्न–भिन्न स्तरों पर कार्यवाही की आवश्यकता होती है। एक है नीति स्तर, सरकार के स्तर पर, इस संदर्भ में कि खतरे वाले कारकों को घटाने के लिए हम क्या कर सकते हैं? बहुत कुछ व्यक्तिगत आदतों और व्यवहार में परिवर्तन लाकर किया जाना है। इसके लिए लोगों द्वारा इंतजार किए जाने के स्थान पर कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। आप देखते हैं कि आज का युवावर्ग अपनी जीवन शैली के कारण अपने तीसरे दशक में ही मधुमेह का शिकार हो रहे हैं। वे अपने कार्यालय मोटरयुक्त परिवहन के माध्यम से पहुंचते हैं, आप अपने कार्यालय पहुंचने के लिए मोटर वाहन का प्रयोग करते हैं, आप आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं, आप नियमित रूप से व्यायाम नहीं करते हैं, इनके अलावा धूम्रपान और एल्कोहल सेवन अन्य संभावित खतरे वाले कारक हैं। मेरा मानना है कि इसके लिए एक बड़े पैमाने पर व्यापक जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है जिससे कम से कम हमारे युवा आज जागरूक हो सकें। यही स्थिति पश्चिमी देशों में देखी गई थी, उस दौरान वे आवश्यकता से अधिक भोजन करते थे, उसके पश्चात पश्चिमी देशों के युवा लोगों ने माना कि ये सभी खतरे वाले कारक हैं, उन लोगों ने अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने की शुरुआत कर दी।

सरकार खाद्य वस्तुओं और आर्थिक अनुदान दरों पर उपलब्ध खाद्यों की पैकिंग पर नमक और चीनी की मात्रा को अंकित करने की नीतियों पर विचार कर सकती है। आज यदि हम सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम की तरफ देखें तो, लोगों को बहुत कम जैसे कि 2 और 3 रुपए प्रति किलो की दरों पर चावल और गेहूं की आपूर्ति करते हैं और कुछ राज्यों में दालें और मोटे अनाजों की भी आपूर्ति की जाती है। परन्तु हमारे आहार में किस तत्व की कमी हैं ? हमारे आहार में सूक्ष्मपोषक तत्वों (माइक्रोन्युट्रिएंट) की अल्पता है। आई सी एम आर के हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा पिछले कुछ वर्षों में पोषण पर बड़ी संख्या में सर्वेक्षण किए गए हैं और ताजा सर्वेक्षणों

से दिखाई देता है कि अधिकांश राज्यों के 80 प्रतिशत से अधिक लोगों के आहार में विटामिनों और खनिजों– जैसे कि विटामिन ए, डी, लौह, जिंक आदि की उपलब्धता संस्तुत मात्रा से 50 प्रतिशत कम थीं।

देश में अभी भी बहुत उच्च दरों में कुपोषण की उपस्थिति के पीछे यह एक कारण हो सकता है। हाल ही के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4 (एन एफ एच एस–4) से प्राप्त आंकड़ों में दिखाई देता है कि एन एफ एच एस–3 से बौनापन और अल्पभार की घटनाओं में गिरावट आई है। परन्तु यह कमी आशा के अनुरूप नहीं है। इससे दिखाई देता है कि एकीकृत बाल विकास योजना (आई सी डी एस), आंगनवाड़ी, मध्यान्ह भोजन (मिड–डे मील) और पी डी एस जैसी हमारी सभी योजनाओं के बावजूद कुपोषण की समस्या केवल आहार की मात्रा ही नहीं बल्कि उसकी गुणवत्ता के संदर्भ में सोचने की आवश्यकता है। यदि आप अपने आहार से केवल कार्बोहाइड्रेट और कुछ प्रोटीन प्राप्त कर रहे हैं, और सूक्ष्मपोषक तत्वों (माइक्रोन्युट्रिएंट्स) को प्राप्त नहीं कर रहे हैं तो आपकी उपयुक्त वृद्धि नहीं होगी। यदि आपके शरीर में कृमियों और अन्य संक्रमण की उपस्थिति है तो आपके शरीर में पोषक तत्वों का उपयुक्त अवशोषण नहीं हो पाएगा। इसलिए हमें पोषण एक समग्र रूप में देखने की आवश्यकता है, केवल यह नहीं कि आप कितनी मात्रा में भोजन करते हैं।

यह आलेख मुम्बई स्थित ***'इंडिया स्पेंड'*** के दिनांक 10 अगस्त, 2017 के अंक में प्रस्तुत सुश्री श्रेया शाह द्वारा नई दिल्ली स्थित स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की सचिव और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन से किए गए साक्षात्कार पर आधारित है।

साभार 'इंडिया स्पेंड' स्पेंडिंग ऐण्ड पॉलिसी रिसर्च फाउण्डेशन, मुम्बई।

कोलकाता में आयोजित प्रदर्शनी में आई सी एम आर की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने 'बंगाल मानव संसाधन विकास फाउण्डेशन', कोलकाता द्वारा आयोजित एक 4 दिवसीय प्रदर्शनी में भाग लिया। यह प्रदर्शनी कोलकाता में गोड़िया स्थित दीनबंधु एण्ड्रयूज कॉलेज प्रांगण में दिनांक 17–20 अगस्त, 2017 के दौरान आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर मुख्यालय के अलावा आई सी एम आर के कोलकाता स्थित दो संस्थान यथा –राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान और क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र पूर्वी (आर ओ एच सी ईस्ट) ने भाग लिया।

माननीय सांसद श्रीमती शताब्दी रॉय आई सी एम आर पैवीलियन में

दर्शकगण

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दिनांक 17 अगस्त, 2017 को माननीय सांसद (लोक सभा) श्रीमती शताब्दी रॉय ने किया। उन्होंने आई सी एम आर पैवीलियन का भी दौरा किया जहां आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. एन. पाण्डेय ने उन्हें आई सी एम आर की शोध गतिविधियों के विषय में जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय हैजा एवं आंत्ररोग संस्थान और क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र के वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों ने पैवीलियन में पधारे छात्र–छात्राओं और जन सामान्य आगन्तुकों को आई सी एम आर के शोध कार्यों और उपलब्धियों की जानकारी प्रदान की। आर ओ एच सी के स्टाफ ने उपकरणों के माध्यम से परिवेश में ताप, ध्वनि और धूल के स्तरों की माप करने का प्रदर्शन किया। चार–दिवसीय इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण और जन सामान्य पधार कर लाभान्वित हुए।

दर्शकगण

दिनांक 20 अगस्त, 2017 को प्रदर्शनी का समापन समारोह माननीय सांसद (राज्य सभा) श्री जॉर्ज बेकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने भी आई सी एम आर पैवीलियन का दौरा किया, जहां

दर्शकगण

डॉ के. एन. पाण्डेय ने आई सी एम आर की विविध शोध गतिविधियों और उपलब्धियों से अवगत कराया। समापन समारोह के दौरान माननीय सांसद महोदय ने प्रदर्शनी के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किए। आई सी एम आर की महानिदेशक की ओर से डॉ पाण्डेय ने प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्राप्त किए।

माननीय सांसद श्री जॉर्ज बेकर से स्मृति चिन्ह प्राप्त करते डॉ के. एन पाण्डेय

कोलकाता में आयोजित 21वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी में आई सी एम आर की भागीदारी

दिनांक 24 से 27 अगस्त, 2017 के दौरान न्यू बैरेकपोर, कोलकाता में आयोजित 21वीं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर मुख्यालय के साथ–साथ कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान (एन आई सी ई–डी) और क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र, पूर्व (आर ओ एच सी ई) ने भी भाग लिया। आई सी एम आर के वैज्ञानिकों ने पैवीलियन में आए व्यक्तियों का आई सी एम आर द्वारा संपन्न शोध परिणामों पर आधारित उपलब्धियों से अवगत कराया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'जी' डॉ चन्द्रशेखर ने आई सी एम आर की शोध उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की। इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में जनसाधारण और छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही।

दर्शकगण

डॉ चन्द्रशेखर एवं अन्य अधिकारीगण

आई सी एम आर, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा इंटरनेशनल वैक्सीन इंस्टीट्यूट (IVI) के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए

दिनांक 21 अगस्त, 2017 को भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने *इंटरनेशनल वैक्सीन इंस्टीट्यूट* (IVI), दक्षिण कोरिया के साथ वैक्सीन अनुसंधान और विकास पर सहयोग करने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर डॉ सौम्या स्वामीनाथन, सचिव स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग तथा महानिदेशक आई सी एम आर; डॉ मनोज झालानी, अतिरिक्त सचिव एवं प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन; तथा डॉ जेरोम एच. किम, महानिदेशक, *इंटरनेशनल वैक्सीन इंस्टीट्यूट* के बीच किए गए। इस समझौता ज्ञापन से IVI और भारत के बीच सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे। इस भागीदारी से भारत और IVI के बीच शोध गतिविधियों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और बढ़ावा मिलेगा। साथ–साथ वैक्सीन की बेहतर उपलब्धता के परिणामस्वरूप विश्व के निर्धन वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के IVI के लक्ष्यों को प्राप्त करना भी सुनिश्चित होगा। इससे क्षमता निर्माण संबंधी प्रयासों को गति मिलेगी जिससे भारत के वैक्सीन उद्योग, सार्वजनिक स्वास्थ्य और प्रतिरक्षीकरण कार्यक्रम लाभान्वित होंगे।

डॉ सौम्या स्वामीनाथन, सचिव, डी एच आर एवं महानिदेशक, आई सी एम आर के साथ अन्य अधिकारीगण

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

बाल एच आई वी पर एक आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन पर बैठक	1 अगस्त, 2017
नेशनल एपेक्स कमीटी फॉर स्टेम सेल रिसर्च ऐण्ड थिरैपी (NAC-SCRT) की 24वीं उपसमिति की बैठक	1 अगस्त, 2017
मानव अनुसंधान पर केन्द्रीय एथिक्स समिति की बैठक	2 अगस्त, 2017
वैक्सींस और प्रतिरक्षीकरण अनुसंधान नेटवर्क की बैठक	2 अगस्त, 2017
हीमोफीलिया पर जांच हेतु बैठक	3 अगस्त, 2017
नेशनल गाइडलाइंस फॉर स्टेम सेल रिसर्च ऐण्ड थिरैपी (2013) के संशोधन हेतु ड्राफ्टिंग समिति की बैठक	9 अगस्त, 2017
नीति और कार्यक्रमों को आकार देने हेतु डाटा और आंकड़ों का प्रयोग करते हुए महिलाओं के स्वास्थ्य की भावी स्थिति पर बैठक	10 अगस्त, 2017
एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टैंस (AMR) पर भारत–नार्वे सहयोग के 16 और अंतर्गत ICMR-RCN प्रस्तावों की समीक्षा हेतु बैठक	21 अगस्त, 2017
पूर्वोत्तर भारत में विषाणुज यकृतशोथ भार का मूल्यांकन, शीर्षक से बहुकेन्द्रीय टास्क फोर्स परियोजना के लिए सलाहकार समूह की बैठक	18 अगस्त, 2017
अल्प आयु में शुरुआत हुए मधुमेह ग्रस्त लोगों के पंजीकरण पर टास्क फोर्स परियोजना की बैठक	21 अगस्त, 2017
जनजातीय उप योजना के अन्तर्गत वित्तीय सहायता प्राप्त परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा हेतु बैठक	23 अगस्त, 2017
नागपुर में पशुजन्य रोग पर एक राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना हेतु ICMR-ICAR की संयुक्त बैठक	24 अगस्त, 2017
फेज III के अंतर्गत मल्टीसेंट्रिक ओपेन लेबेल, -XDR-TB के परीक्षण हेतु प्रोटोकॉल पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	24 अगस्त, 2017
टी बी की नई वैक्सीनों (VPM 1002, DAR 901 और MIP) के चिकित्सीय परीक्षणों हेतु प्रोटोकॉल विकसित करने हेतु कार्यशाला	28 अगस्त, 2017

दिल्ली में तीव्र श्वसनी लक्षणों पर बाह्य वायु प्रदूषण के प्रभाव पर बहुकेन्द्रीय टास्क फोर्स परियोजना पर बैठक	30 अगस्त, 2017
स्वास्थ्य मंत्रालय की स्क्रीनिंग कमीटी (HMSC) की 123वीं बैठक	30 अगस्त, 2017
एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टैंस (AMR) नेटवर्क के अंतर्गत AMSP गतिविधियों की चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	31 अगस्त, 2017

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ प्रभदीप कौर ने मैरीलैण्ड, यू एस ए में 3 दिवसीय ''अंतर्राष्ट्रीय कैंसर स्क्रीनिंग नेटवर्क सम्मेलन'' में भाग लिया (19–21 जून, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ डी.टी. मौर्य और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ साधना श्रीवास्तव ने सैन डियागो, कैलीफोर्निया, सं रा. अ. में आयोजित ''बायो इंटरनेशनल कनवेंशन 2017'' में भाग लिया (19–22 जून, 2017)।

मदुरई स्थित आयुर्विज्ञान कीटविज्ञानी अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ अपरुप दास ने बेसल, स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न ''2017 साइंस ऑफ इरैडिकेशनः मलेरिया नेतृत्व विकास पाठ्यक्रम'' में भाग लिया (25–30 जून, 2017)।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'जी' और प्रभारी–निदेशक डॉ पूनम सलोत्रा ने होबार्ट, अस्ट्रेलिया में सम्पन्न *''आस्ट्रेलियन सोसाइटी फॉर माइक्रोबायोलॉजी''* की वार्षिक वैज्ञानिक बैठक में भाग लिया (2–5 जुलाई, 2017)।

बैंगलुरु स्थित राष्ट्रीय रोग सूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'ई' डॉ रोली माथुर ने बर्लिन, जर्मनी में सम्पन्न *''जीन एडिटिंग फॉर एडवांस्ड थिरैपीजः गवर्नैंस, पॉलिसी ऐण्ड सोसाइटी''* विषय पर OECD विशेषज्ञ की बैठक में भाग लिया (6–7 जुलाई, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ मनोहर लाल चौधरी ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में ''राष्ट्रीय इंफ्लुएंजा सेंटर्स की वैश्विक बैठक'' में भाग लिया (17–19 जुलाई, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ माधुरी ठक्कर एवं बैंगलोर स्थित राष्ट्रीय रोगसूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'ई' डॉ रोली माथुर ने जॉहन्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में ''वैक्सीन प्रयोगात्मक चिकित्सा परीक्षणों के लिए नैतिक और नियामक मुद्दों पर द्वितीय मानव वैक्सीन परियोजना कार्यशाला में भाग लिया (18-19 जुलाई, 2017)।

मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एस. एल. चौहान ने बाली, इण्डोनेशिया में सम्पन्न' जन्म दोषों की प्रसवकालीन निगरानी और उनके निवारण में प्रगति की समीक्षा करने हेतु WHO की क्षेत्रीय बैठक में भाग लिया (18–20 जुलाई, 2017)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ विजय नेमा एवं वैज्ञानिक 'बी' डॉ अभिजीत वसंतराव कदम ने पेरिस, फ्रांस में नवें अंतर्राष्ट्रीय एड्स सम्मेलन (AIDS 2017) में भाग लिया (23 से 26 जुलाई, 2017)।

राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ डी. टी. मौर्य ने म्यांमार में ''राष्ट्रीय जैव सुरक्षा और जैव सुरक्षा दिशानिर्देशों को अंतिम रूप देने के लिए अल्पावधि तकनीकी परामर्श प्रदान करने के लिए समीक्षा बैठक में भाग लिया (1-9 अगस्त, 2017)।

पुडुचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ पी. जम्बूलिंगम ने लन्दन, यू के में सम्पन्न ''डीवर्म 3 डाटा और सुरक्षा मॉनीटरिंग समिति (DSMOC)'' की प्रथम बैठक में भाग लिया (2 अगस्त, 2017)।

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के अपर महानिदेशक डॉ एस. एम. मेहेण्डले ने ओस्लो, नॉर्वे में सम्पन्न CEPI की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया (23 अगस्त, 2017)।

डिब्रूगढ़ स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ 'ई,' सिराज ए. खान ने क्वींसलैण्ड, आस्ट्रेलिया में 6 दिवसीय ''9th टिक ऐण्ड टिक–बोर्न सम्मेलन /1st एशिया पैसिफिक रिक्केट्सिया सम्मेलन' में भाग लिया (27 अगस्त से 1 सितम्बर, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

व्यावसायिक इतिहास के दस्तावेजीकरण के लिए मानक प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए गोल मेज परामर्शक बैठक और कार्यशाला	8–9 जुलाई, 2017 जोधपुर	डॉ पंकजा रवि राघव अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर (राजस्थान)
चिकित्साविज्ञान में वर्तमान प्रगति पर सी एम ई	8–9 जुलाई, 2017 लखनऊ	कर्नल अरुण कुमार कमाण्ड हॉस्पिटल, सेंट्रल कमाण्ड लखनऊ (यू. पी.)

अमृता वार्षिक विकृतिविज्ञान अपडेट–2017, महिला जनन पथ के विकृतिविज्ञान पर अपडेट	15–16 जुलाई, 2017 कोची	डॉ इंदू आर. नायर अमृता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ कोची (केरल)
ओडिशा में जनजातीय किशोरवय लड़कियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषणः उभरती समस्याएं, चुनौतियां और समाधान पर क्षेत्रीय सेमिनार	26–27 जुलाई, 2017 बालासोर	श्री गोपाल कृष्णा कार बस्ती एरिया डेवेल्पमेंट काउंसिल बालासोर (ओडिशा)
तंबाकू नियंत्रण पर तृतीय कार्यशाला 2017	1–4 अगस्त, 2017 पुडुचेरी	डॉ सितांशु शेखर कार JIPMER पुडुचेरी
पोषण और स्वास्थ्य संचार में प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	3–4 अगस्त, 2017 कोइम्बटूर	डॉ सी. ए. कल्पना अविनाशलिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम साइंस ऐण्ड हॉयर एजूकेशन फॉर वीमेन कोइम्बटूर
जैव चिकित्सा अनुसंधान और औषध विकास में जेब्राफिश पर राष्ट्रीय कार्यशाला	4–5 अगस्त, 2017 पुडुचेरी	डॉ सी. गिरीश JIPMER पुडुचेरी
MEDHA-चिकित्सा उपकरण हैकथॉन पर कार्यशाला	4–6 अगस्त, 2017 वर्धा	प्रो. अभय गेधाने जे. एन. मेडिकल कॉलेज दंत मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ सवांगी (ड) वर्धा महाराष्ट्र
सिर और गर्दन के कैंसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	5 अगस्त, 2017 दिल्ली	डॉ विपिन अरोड़ा यू सी एम एस ऐण्ड जी बी टी हॉस्पिटल दिल्ली
स्त्रीरोगविज्ञानी कैंसर के प्रबंधन में अपडेट तथा टारगेट वॉल्यूम डेलीनिएशन गाइनीकोलॉजिकल सर्जरी, मॉलीक्युलर ऑंकोलॉजी में सम्मेलन तथा कार्यशाला	5–6 अगस्त, 2017 नई दिल्ली	डॉ अभिषेक शंकर डॉ बी आर ए आई आर सी एच अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
बाल आधान चिकित्साविज्ञान पर प्रथम वार्षिक सी एम ई	6 अगस्त, 2017 नोएडा	डॉ सत्यम अरोड़ा सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल ऐण्ड पोस्ट ग्रेजुएट टीचिंग इंस्टीट्यूट (SSPH&PGTI) नोएडा (यू पी)
छठा रामलिंगस्वामी व्याख्यान एवं हिपैटोपैथोलॉजी अपडेट, 2017	8 अगस्त, 2017 नई दिल्ली	डॉ अर्चना रस्तोगी इंस्टीट्यूट ऑफ लीवर ऐण्ड बिलियरी साइंसेज़ नई दिल्ली
शोध विधिविज्ञान एक अनुसंधान प्रस्ताव के विकास के मूल सिद्धांतों पर कार्यशाला	10 अगस्त, 2017 जयपुर	डॉ सुधांशु कक्कड़ राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज़ जयपुर (राजस्थान)
OSMECON सम्मेलन	10–12 अगस्त, 2017 हैदराबाद	श्री जिंका चन्द्रकांत उस्मानिया मेडिकल कॉलेज हैदराबाद
नियमित प्रक्रियाओं की कार्यप्रणाली और लघु प्रायोगिक पशुओं की सुरक्षा पर कार्यशाला	11–12 अगस्त, 2017 कोइम्बटूर	डॉ हरिप्रसाद लक्ष्मणन करपागम यूनीवर्सिटी कोइम्बटूर
नेतृत्व और प्रबंधन कार्यक्रम (LAMP) और स्वास्थ्य अनुसंधान में अनुसंधान पद्धति पर 5वीं कार्यशाला	17–26 अगस्त, 2017 नई दिल्ली	सुश्री वैशाली देशमुख दि INCLEN ट्रस्ट इंटरनेशनल नई दिल्ली

संकटकालीन देखभाल पर सी एम ई	18–19 अगस्त, 2017 दिल्ली	ले. कर्नल ए. डी चौधरी कॉलेज ऑफ नर्सिंग आर्मी हॉस्पिटल (R&R) दिल्ली कैन्ट
औषध खोज और विकास के लिए इन–विट्रो सेल लाइंस के अध्ययन पर कार्यशाला	18–19 अगस्त, 2017 रायपुर	डॉ विजय कुमार सिंह कोलंबिया इंस्टीट्यूट ऑफ फॉर्मेसी रायपुर (छत्तीसगढ़)
स्वास्थ्य अर्थशास्त्र पर राष्ट्रीय सेमिनार	18–19 अगस्त, 2017 बेलागावी	डॉ आर. एस. मुघोल के. एल. ई. युनिवर्सिटी जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज बेलागावी (कर्नाटक)
डाक्टरल अनुसंधान में समस्याओं और चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	25 अगस्त, 2017 नई दिल्ली	डॉ वाई. सी. गोस्वामी आई टी एम विश्वविद्यालय, ग्वालियर
भारतीय एरोस्पेस मेडिसन समाज का 56वां वार्षिक सम्मेलन	25–27 अगस्त, 2017 बैंगलोर	विंग कमाण्डर वाई. एस. दहिया इंस्टीट्यूट ऑफ एरोस्पेस मेडिसिन इंडियन एयर फोर्स बैंगलोर
फील्ड मेडिकल सेट अप में आपात स्थितियों से निपटने के लिए सी एम ई	26–27 अगस्त, 2017 कोलकाता	कर्नल सुब्रतो सेन कमाण्ड हॉस्पिटल (EC) कोलकाता
ICMR–NICPR के सहयोग में जैवसांख्यिकी एवं बोध विधि – पर कार्यशाला	1 सितम्बर, 2017, जोधपुर	डॉ मनोज कमल अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर (राजस्थान)
भारतीय मलेरिया एवं अन्य संचारी रोग संस्था (ISMOCD), तथा भारतीय महामारी विज्ञानी संघ का 12 वां संयुक्त वार्षिक सम्मेलन	1–3 सितम्बर, 2017 पुणे	डॉ (श्रीमती) रिना तिलक आर्म्ड फोर्सेस मेडिकल कॉलेज (AFMC) पुणे
न्यूट्रास्यूटिकल्स और चिरकारी रोगों पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	1–3 सितम्बर, 2017 गोवा	डॉ अजय कुमार बी. कुन्नूमाक्कारा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी गुवाहाटी (असम)
ओरल पैथोलॉजिया – प्रारंभिक से लेकर विशेषज्ञता तक पर सतत प्रोफेशनल विकास कार्यक्रम	2 सितम्बर, 2017 मनीपाल	डॉ मोनिका चारलोटे सोलोमन मनीपाल कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेज मनीपाल यूनिवर्सिटी मनीपाल (कर्नाटक)
सम्मेलन संगम 2017 (SANGAM 2017) शंकर नेत्रालय ग्लूकोमा मीट	2–3 सितम्बर, 2017 चेन्नई	डॉ ए. पारिवाधिनी मेडिकल रिसर्च फाउण्डेशन शंकर नेत्रालय चेन्नई
डर्मेटोफाइटोसेस भावी चुनौतियों पर सी एम ई	5 सितम्बर, 2017 तिरुचिरापल्ली	डॉ जी. वाज़ावन्डल चेन्नई मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल ऐण्ड रिसर्च सेंटर तिरुचिरापल्ली (तमिल नाडु)
एंडोक्राइन सर्जरी में 13वां स्नातकोत्तर कोर्स और एस्थेटिक थॉइरॉयड सर्जरी में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	6–9 सितम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ ज्ञानचन्द संजय गांधी पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़, लखनऊ
सेल और जीन थिरैपी पर द्वितीय वार्षिक संगोष्ठी	7–8 सितम्बर, 2017 वेल्लोर	डॉ सरवनाभवन थंगावेल सेंटर फॉर स्टेम सेल रिसर्च क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज कैम्पस वेल्लोर (तमिल नाडु)

स्मार्ट हेल्थकेयर मॉनीटरिंग सिस्टम में तकनीकी प्रगति पर सेमिनार	7–8 सितम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ आर. सुन्दरमणि अविनाशलिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम साइंस ऐण्ड हायर एजूकेशन फॉर वीमेन कोइम्बटूर
शोध प्रोटोकॉल पर विचार करने, रूपरेखा तैयार करने और उसे विकसित करने के लिए स्वास्थ्य पेशोवरों के प्रशिक्षण पर कार्यशाला	7–9 सितम्बर, 2017 इंदौर	डॉ उषा उकांडे चोइथराम कॉलेज ऑफ नर्सिंग इंदौर (मध्य प्रदेश)
अपाचे स्पार्क के साथ बिग डेटा एनालिटिक्स पर सेमिनार (NSBAAS-2017)	8 सितम्बर, 2017 तिरुचेंगोड नामक्कल	श्री के. विजय के. एस. आर. कॉलेज ऑफ आर्ट्स ऐण्ड साइंस फॉर वीमेन तिरुचेंगोड, नामक्कल (तमिल नाडु)
स्वास्थ्य शिक्षा प्रयास का प्रयोग करते हुए तम्बाकू के विरुद्ध गली के दुकानदारों और उनके ग्राहकों को सशक्त बनाने के लिए स्वास्थ्य शिक्षा छात्रों और पेशेवरों को संवेदीकृत बनाने और उनमें जागरूकता उत्पन्न करने पर कार्यशाला	8 सितम्बर, 2017 चण्डीगढ़	डॉ सोनू गोयल स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, PGIMER चण्डीगढ़
नार्थ–ईस्ट हेल्थकेयर समिट – 2017	8–9 सितम्बर, 2017 गुरुग्राम	डॉ पुश्कर कुमार पब्लिक हेल्थ फाउण्डेशन ऑफ इंडिया, गुड़गांव
AOGIN इंडिया लखनऊ 2017 8वां वार्षिक सम्मेलन	8–10 सितम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ निशा सिंह किंग जॉर्ज मेंडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ (यू पी)
बाल शल्य चिकित्सा अनुसंधान और नवजात एवं भ्रूण शल्य चिकित्सा अनुसंधान पर अपडेट पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	8–10 सितम्बर, 2017 नई दिल्ली	प्रो. डी. के. गुप्ता अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
मेडिकल एथिक्स पर संगोष्ठी और कार्यशाला	9 सितम्बर, 2017 बैंगलोर	डॉ मेघा राव रमैया मेडिकल कॉलेज बैंगलोर
अश्वगंधा पर राष्ट्रीय संगेष्ठी	9–10 सितम्बर, 2017 कोलकाता	प्रो. पुलोक के. मुखर्जी जादवपुर यूनिवर्सिटी कोलकाता
गाइनीकॉन 2017: प्रसूति एवं स्त्री रोगविज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान में एंडोस्कोपी सर्जरी में प्रमाण आधारित विधियों पर कार्यशाला और सी एम ई	9–10 सितम्बर, 2017 पुणे	ब्रि. शक्ति वर्धन आर्म्ड फोर्सेज़ मेडिकल कॉलेज (AFMC) पुणे
नर्सिंग में उभरते परिप्रेक्ष्य पर सम्मेलन	11–12 सितम्बर, 2017 श्रीनगर	सुश्री रेहाना अख्तर शेरई कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ श्रीनगर (जम्मू ऐण्ड कश्मीर)
स्टेम कोशिकाओं पर इम्यूनोलोजी और फ्लोसाइटोमेट्री कार्यशाला में सी एम ई	11–13 सितम्बर, 2017 चण्डीगढ़	प्रो. सुनील के. अरोरा स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
दंत चिकित्सा अनुप्रयोगों के लिए कम्प्यूटर और डिजिटल इमेज प्रोसेसिंग पर कार्यशाला	11–15 सितम्बर, 2017 पोट्टापलायम	डॉ एम. अरुणाचलम के. एल. एन. कॉलेज ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (के एल एन सी आई टी), पोट्टापलायम (शिवगंगई) तमिल नाडु

निओनैटोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (MGMNEOPAICON)	12–17 सितम्बर, 2017 नवी मुम्बई	डॉ निमेन सी मोहंती एम. जी. एम. इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ सांइस नवी मुम्बई
मानव शरीर में व्यावहारिक बायोमेकैनिक्स के भविष्य पर सेमिनार	14 सितम्बर, 2017 पोलाची	श्री आई. अकिलन पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
स्वास्थ्य देखभाल और रोगी सुरक्षा में मानवीय कारकों की देखभाल और एर्गोनॉमिक्स पर सेमिनार	14 सितम्बर, 2017 रासीपुरम (नामक्कल)	डॉ. पी. सुरेश मुथायामल इंजीनियरिंग कॉलेज, रासीपुरम (नामक्कल) तमिल नाडु
IOT का उपयोग कर स्वास्थ्य सुरक्षा निगरानी के लिए स्मार्ट वायरलेस सेंसर नेटवर्क्स पर सेमिनार	14–15 सितम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ के. शीला शोभना रानी श्री राम कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
चिकित्सीय अनुसंधान और स्वास्थ्य देखभाल में मेडिकल इमेज प्रोसेसिंग तकनीकों पर कार्यशाला	14–16 सितम्बर, 2017 चेन्नई	सुश्री एम. ए. फेमिना के. सी. जी. कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी चेन्नई
चिकित्सीय शोधविधियों पर राष्ट्रीय कार्यशाला	14–16 सितम्बर, 2017 कांचीपुरम	डॉ मेलविन जॉर्ज एस आर एम मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल ऐण्ड रिसर्च सेंटर एस आर एम यूनिवर्सिटी कांचीपुरम (तमिल नाडु)
प्रोटीन विज्ञान और प्रोटिओमिक्स में उभरती प्रवृत्तियों पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः जेनोप्रो 2017	15–16 सितम्बर, 2017 बरेली	श्री सचिन कुमार श्रीवास्तव इनवर्टिस यूनिवर्सिटी बरेली (यू पी)
नैदानिक चिकित्सा में आनुवंशिकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	15–16 सितम्बर, 2017 त्रिशूर	डॉ पी. आर. वर्गीज़ जुबली मिशन मेडिकल कॉलेज ऐण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट त्रिशूर (केरल)
अगली पीढ़ी की सर्वव्यापक स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं के लिए सभी कुछ के लिए इंटनेट पर सेमिनार	15–16 सितम्बर कोइम्बटूर	डॉ टी. वी. पी. सुन्दर राजन श्री शक्ति इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलोजी कोइम्बटूर
जन्म दोष पर सम्मेलन (कोलोक्यिम) (MAHACON IV 2017)	15–16 सितम्बर, 2017 नवी मुम्बई	डॉ अंजली एस. सब्नीस एम. जी. एम. मेडिकल कॉलेज नवी मुम्बई
इंटरनेट ऑफ थिंग्स इन हेल्थकेयर पर सेमिनार (IOTH-2017)	15–16 सितम्बर, 2017 पेरुनदुरई	डॉ एस. भाांति कोंगू इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुनदुरई (इरोड) तमिल नाडु
कॉर्निया कनेक्ट पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2017	15–17 सितम्बर, 2017 मदुरई	डॉ एन. वेंकटेश प्राजना अरविंद आई हॉस्पिटल मदुरई
हॉलिस्टिक मेडिसिन पर सातवीं यूरो भारत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2017	15–17 सितम्बर, 2017 कोट्टायम केरल	डॉ ए जॉर्ज इंस्टीट्यूट ऑफ होलिस्टिक मेडिकल साइंसेज, कोट्टायम (केरल)
तंत्रिका संबंधी विकारों पर शोध में प्रगति पर राष्ट्रीय सम्मेलन तथा तंत्रिका संबंधी विकारों के अध्ययन हेतु तंत्रिका जीवविज्ञानी तकनीकों के प्रयोग पर कार्यशाला	15–22 सितम्बर, 2017 वाराणसी	प्रो. एस प्रसाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी (यू. पी.)

इंडियन एकेडमी ऑफ साइटोलोजिसट्स के यूपी चौप्टर का 5वां वार्षिक सम्मेलन (UP CYTOCON 2017)	16–17 सितम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ राम नवल राव संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ लखनऊ (यू पी)
पेट्री प्लेटों से परे सूक्ष्मजीवविज्ञान पर सम्मेलन	16–17 सितम्बर, 2017 रायपुर	डॉ पदमा दास अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर (छत्तीसगढ़)
भारत में वृद्ध और वयोवृद्धिः हम कहां स्थित हैं, कहां जाना चाहिए पर राष्ट्रीय कोलोकियम	16–18 सितम्बर, 2017 तिरुवनंतपुरम	डॉ पी. के. बी. नायर सेंटर फॉर जेराटोलॉजिकल स्टडीज़ तिरुवनंतपुरम (केरल)
नैदानिक कवकविज्ञान में मौलिक एवं आण्विक तकनीकों पर हैण्ड्स ऑन कार्यशाला	16–20 सितम्बर, 2017 चेन्नई	डॉ अनुपमा ज्योति किंडो श्री रामचन्द्र यूनिवर्सिटी चेन्नई
आण्विक विधि पी सी आर और आर टी–पी सी आर तकनीक पर राष्ट्रीय कार्यशाला	19–20 सितम्बर, 2017 सागर	डॉ आशीष कुमार जैन ADINA इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल सांइसेज़ सागर (मध्य प्रदेश)
गणितीय आकृतिक और ग्राफः इंटरैक्टिव मेडिकल इमेज विभाजन के लिए प्रयोग पर संगोष्ठी	19–20 सितम्बर, 2017 पोलाची	डॉ टी. गांधी माठी पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
जैव सूचनाविज्ञान में मशीन द्वारा सीखने के प्रभाव पर संगोष्ठी	19–20 सितम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ जी. विजया KGISL इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
वेंट्रीकुलर एसिस्ट डिवाइसेजः अ स्कोप फॉर इंप्रूविंग कार्डियक सपोर्ट में ताजा प्रगति पर सेमिनार	20–21 सितम्बर, 2017 पोलाची	डॉ डी. गणेश कुमार पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
भारतीय प्रतिरक्षाविज्ञान संस्था के तत्वावधान में भारत के विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर प्रतिरक्षाविज्ञान में सी एम ई पाठ्यक्रम	21–22 सितम्बर, 2017 एवं 24–25 अक्टूबर, 2017 विरुथुनागर	डॉ अल्पना शर्मा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
सीसा, अन्य भारी धातुओं तथा पोषक तत्वों की पारस्परिक क्रिया–विषाक्तता निवारण के लिए चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	21–23 सितम्बर, 2017 हैदराबाद	डॉ बी. दिनेश कुमार ड्रग टॉक्सिकोलॉजी डिवीजन राष्ट्रीय पोषण संस्थान हैदराबाद
कम्प्यूटेशनल औषध की खोज में उन्नत और नवीन तकनीकों पर कार्यशाला	22–23 सितम्बर 2017 बैंगलोर	प्रो. अन्धले गणेश सरवाराम आचार्य ऐण्ड बी. एम. रेड्डी कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी बैंगलोर
चिकित्सा उपकरण और नैदानिकीः भारत में वर्तमान आवश्यकता और अवसर पर संगोष्ठी	22–23 सितम्बर, 2017 पुणे	डॉ एस. वी. शिरोल्कर डॉ डी. वाई. पाटिल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ ऐण्ड रिसर्च, पुणे
सार्वजनिक स्वास्थ्य रिकॉर्डस से महामारी की भविष्यवाणी करने के लिए डेटा विश्लेषक तकनीकों पर सेमिनार	22–23 सितम्बर, 2017 चेन्नई	डॉ के. देवकी राजलक्ष्मी इंजीनिरिंग कॉलेज चेन्नई

नैनो विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2017	22–24 सितम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ खेम बी. थापा बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी लखनऊ (यू. पी.)
सांख्यिकी सॉफ्टवेयर के प्रयोगों के उपयोग स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान के प्रति एक चुनौती पर कार्यशाला	23 सितम्बर, 2017 कांचीपुरम	सुश्री के. जे. पुष्पाकला चेटीनाद हॉस्पिटल ऐण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट केलमबक्कम (कांचीपुरम) तमिल नाडु
जल जेट मशीन के बायो मेडिकल प्रयोग पर सेमिनार	23 सितम्बर, 2017 करुर	डॉ एम. शिवराजा एन. एस. एन. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी करुर (तमिल नाडु)
फार्मास्युटिकल विज्ञान और अनुसंधान में अग्रणी पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	23–24 सितम्बर, रायपुर	डॉ राम कुमार साहू कोलंबिया इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी रायपुर (छत्तीसगढ़)
स्वास्थ्य मनोविज्ञान में समसामयिक प्रवृत्तियां: मनोविज्ञान की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	25–26 सितम्बर, 2017 तिरुपति	प्रो. वी. श्रीकांत रेड्डी एस वी यूनिवर्सिटी तिरुपति (आंध्र प्रदेश)
अल्प आयु की महिलाओं में बहुपुटीय डिंबग्रंथि रोग एवं स्मार्ट स्वास्थ्यप्रबंधन पर नवीन जानकारी प्राप्त करने पर कार्यशाला	25–26 सितम्बर, 2017 तंजावूर	डॉ आर. कलाइवानी बेन सेकोर्स कॉलेज फॉर वीमेन तंजावूर (तमिल नाडु)
भारतीय दंत अनुसंधान संस्था, IADR इंडिया डिवीजन का 30वां वार्षिक सम्मेलन	30 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2017 नई दिल्ली	डॉ अजय लोगानी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
हृद्‌वाहिकीय रोग के लक्षणों और उपचारात्मक सुविधाओं पर सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम पर कार्यशाला	1 अक्टूबर, 2017 पेरुनदुरई (इरोड)	डॉ सी. एन. मेरीमुथ्यु नन्दा इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुनदुरई (इरोड) तमिल नाडु
GSICON 2017, जीरियाट्रिक केयर और जीरॉन्टोलॉजी पर 14वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	1–2 अक्टूबर, 2017 तिरुपति	डॉ ए. एस. किर्ती श्री वेंकटेश्वरा मेडिकल कॉलेज, तिरुपति
मधुमेह प्रबंधन में इमर्जिंग सेंसर प्रौद्योगिकी के चिकित्सीय प्रयोग पर सेमिनार	4–5 अक्टूबर, 2017 नामक्कल	डॉ पी. कुमार के. एस. रंगास्वामी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी त्रिचेंगोड (नामक्कल) तमिल नाडु
CT स्कैन और MIMICS का उपयोग करते हुए चिकित्सा प्रत्यारोपण के लिए जैव मुद्रण पर कार्यशाला	5 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ एन. नटराजन श्री कृष्णा कॉलेज ऑफ टेक्नोलोजी कोइम्बटूर
आर. और बायोकन्डक्टर का प्रयोग करते हुए हेल्थकेयर डेटा एनालिटिक्स पर कार्यशाला	6–7 अक्टूबर, 2017 सत्यमंगलम (इरोड)	डॉ डी. शशिकला बन्नारी अम्मन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी सत्यमंगलम, इरोड (तमिल नाडु)
यू सी एम एस सर्जिकल ऑन्कोलॉजी अपडेट–2017, ऑन्कोलॉजी और मास्टर विडियो कार्यशाला में वर्तमान प्रगति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	7–8 अक्टूबर, 2017 नई दिल्ली	डॉ पंकज कुमार गर्ग यू सी एम एस एवं जी बी टी हॉस्पिटल दिल्ली
मधुमेह में भावी प्रवृतियों पर सम्मेलन 2017	9–10 अक्टूबर, 2017 बेलागावी	डॉ एम. वी. जाली KLES डॉ प्रभाकर कोरे हॉस्पिटल ऐण्ड मेडिकल रिसर्च सेंटर बेलागावी (कर्नाटक)
स्वास्थ्य अनुसंधान पद्धति और प्रमाण आधारित चिकित्सा में अंतर्राष्ट्रीय पाठयक्रम	9–13 अक्टूबर, 2017 बैंगलोर	डॉ राशना दास हज़ारिका इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स असम स्टेट ब्रांच गुवाहाटी (असम)

इलैक्ट्रॉनिक नाक प्रौद्योगिकी और उसके प्रयोगों के प्रभाव पर संगोष्ठी	10 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ सी. नटराजन हिन्दुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
यथार्थ (वास्तविकता) पर कार्यशाला	10–11 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ आर. मधुमति श्री रामकृष्ण इंजीनियरिंग कॉलेज कोइम्बटूर
भारतीय फिजियोलॉजिस्ट एवं फार्माकोलोजिस्ट संस्था का 63वां वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन	10–14 अक्टूबर, 2017 पुडुचेरी	डॉ गिरवर सिंह गौड़ JIPMER पुडुचेरी
स्टीरियोटैक्टिक बॉडी रैडिएशन ऐण्ड साइबर नाइफ रेडियो सर्जरी प्रोसेस सिस्टम्स पर सेमिनार	11 अक्टूबर, 2017 तिरुचेंगोड	श्री पी. जगदीश के. एस. आर. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग तिरुचेंगोड (नामक्कल) तमिल नाडु
स्वास्थ्य सुरक्षा IOT प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	11–12 अक्टूबर, 2017 तिरुनेलवेली	डॉ जी. राजा कुमार फैंसिस जैवियर इंजीनियरिंग कॉलेज तिरुनेलवेली (तमिल नाडु)
तंत्रिका संबंधी रोगों के विरुद्ध हर्बल औषध उपचार : नवीन प्रगति और चुनौतियों पर राष्ट्रीय सेमिनार	11–12 अक्टूबर, 2017 त्रिशूर	डॉ के. कृष्णा कुमार सेंट जेम्स कॉलेज ऑफ फॉर्मास्युटिकल साइंसेज़ चलाकुडी (त्रिशूर) केरल
पशुजन्य रोगों के इंटरसेक्टोरल प्रयास : नीतियां और चुनौतियों पर संगोष्ठी	11–13 अक्टूबर, 2017 तिरुपति	डॉ ए. जगदीश बाबू श्री वेंकटेश्वरा वेटेरीनरी यूनिवर्सिटी, कॉलेज ऑफ वेटेरीनरी साइंस तिरुपति (आंध्र प्रदेश)
प्रतिरक्षाविज्ञान में प्रगति पर राष्ट्रीय कार्यशाला	12–13 अक्टूबर, 2017 दिल्ली	डॉ मधु खन्ना वी.पी. चेस्ट इंस्टीट्यूट, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, दिल्ली
हेड ऐण्ड नेक कैडावरिक डिसेक्शन पर हैण्ड्स ऑन तथा रीकंस्ट्रक्शन कार्यशाला	12–14 अक्टूबर, 2017 दिल्ली	डॉ विपिन अरोरा यू सी एम एस और जी टी बी हॉस्पिटल दिल्ली
SEM और TEM द्वारा नैनोमेडिसन की विशेषता ज्ञात करने चुनौतियों और उनके तरीकों पर संगोष्ठी	13–14 अक्टूबर, 2017 बैंगलोर	डॉ राजेश आर. आचार्य ऐण्ड बी. एम. रेड्डी कॉलेज ऑफ फार्मेसी, बैंगलोर
प्राथमिक इम्यून की कमी संबंधी विकारों पर 6ठा परिचय पाठ्यक्रम	15 अक्टूबर, 2017 गुवाहाटी	डॉ डेनिस ज़ैवियर सेंट ऐ एम सी, सेंट जे आर आई सेंट जॉन्स नेशनल एकेडमी ऑफ हेल्थ सांइसेज़ बैंगलोर
चिकित्सा उपकरण, नैदानिक अध्ययन और विनियामक पहलुओं पर संगोष्ठी	21 अक्टूबर, 2017 गांधीनगर	प्रो. श्रीकल्प देशपाण्डे के. बी. इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च (KBIPER) गांधीनगर (गुजरात)
उभरते एवं पुनः उभरते विषाणुज रोगों के विरुद्ध औषध डिजाइन एवं खोज में नवीन प्रगति पर राष्ट्रीय सेमिनार	24–25 अक्टूबर, 2017 कृष्णनकोइल	डॉ पी. सेल्वम श्री सी वी रमन कुष्णन इंस्टीट्यूट रिसर्च सेंटर क्लासालिंगम यूनिवर्सिटी कृष्णनकोइल (तमिल नाडु)
इनोवेटिव बायोमैटीरियल्स : टेक्नोलॉजीज लाइफ ऐण्ड सोसाइटी पर 6ठी एशियन बायोमैटीरियल्स कांग्रेस (ABMC6)	25–27 अक्टूबर, 2017 तिरुवनंतपुरम	डॉ मनोज कॉमथ श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज़ ऐण्ड टेक्नोलोजी तिरुवनंतपुरम (केरल)

इंडियन सोसाइटी ऑफ वेटेरिनरी फार्मेकोलॉजी टॉक्सिकोलॉजी (ISVPT) का 17वां वार्षिक सम्मेलन तथा एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध का मुकाबला करने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	26–27 अक्टूबर, 2017 हिसार	डॉ विनोद कुमार कॉलेज ऑफ वेटेरीनरी सांईसेज़ हिसार (हरियाणा)
RNTC – क्षयरोग समाप्ति की दिशा में कदम पर सी एम ई	26–28 अक्टूबर, 2017 धारवाड़	डॉ पुष्पा एस. पाटिल एस डी एम कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज़ ऐण्ड हॉस्पिटल धारवाड़ (कर्नाटक)
GISICON-2017	26–28 अक्टूबर 2017 भोपाल	डॉ शशांक पुरवार अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल
शोर पेरित श्रवण क्षति : हियरिंग कंजर्वेशन कार्यक्रम की शुरुआत के लिए एक मार्गदर्शन पर सेमिनार	27 अक्टूबर, 2017 मैसूर	डॉ अनिमेश बर्मन ऑल इंडिया इस्टीट्यूट ऑफ स्पीच ऐण्ड हियरिंग, मैसूर
भारत में ग्रामीण समुदायों के पोषण विकास की दिशा में एकीकृत प्रयासों पर संगोष्ठी	27 अक्टूबर, 2017 पेरुनदुरई	डॉ के. चन्द्र मोहन कोंगू इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुनदुरई (इरोड) तमिल नाडु
स्त्री रोग विज्ञान संबंधी पैथोलॉजी – वर्तमान प्रगति और अपडेट पर अंतर्राष्ट्रीय सी एम ई	28–29 अक्टूबर, 2017 चण्डीगढ़	डॉ राधिका श्री निवासन PGIMER चण्डीगढ़
आयुर्वेदिक दवाइयों में ट्रांसलेशनल शोध में मौलिक विज्ञान की भूमिका पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	28–29 अक्टूबर, 2017 वाराणसी	डॉ रत्नेश कुमार राव महिमा रिसर्च फाउण्डेशन ऐण्ड सोशल वेल्फेयर वाराणसी (यू. पी.)
TCS की वार्षिक बैठक और स्वास्थ्य और रोग में फ्लो साइटोमीट्री के प्रयोगों पर कार्यशाला	28–31 अक्टूबर, 2017 त्रिवेंद्रम	डॉ प्रिया मेरी ज़ैकब रीजनल कैंसर सेंटर त्रिवेंद्रम (केरल)
ट्रांसलेशनल तंत्रिकाविज्ञान तथा मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा में उसके प्रयोग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	29–31 अक्टूबर, 2017 कटक	डॉ मनोरमा पत्री रावेंशा विश्वविद्यालय कटक (ओडिशा)
चिकित्सीय तंत्रिका विज्ञान में चुनौतियां : बेंच से बेडसाइड तक पर संगोष्ठी	1 नवम्बर, 2017 भुवनेश्वर	डॉ एस. सी. महापात्रा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भुवनेश्वर
भारतीय पोषण समाज का 49वां वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन	2–4 नवम्बर, 2017 जोरहट	डॉ मामोनी दास असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी जोरहट (असम)
बाल गहन सुरक्षा की द्वितीय एशियाई कांग्रेस	2–5 नवम्बर, 2017 चण्डीगढ़	प्रो. अरुण बंसल PGIMER चण्डीगढ़
गहन शिक्षण फ्रेमवर्क के साथ मेडिकल इमेज विश्लेषण पर संगोष्ठी	3–4 नवम्बर, 2017 पोलाची	डॉ डी. चित्रा पी.ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
प्रथम विश्व NCD कांग्रेस के अवसर पर जी ए सी डी कार्यान्वयन विज्ञान कार्यशाला पर आई सी एम आर जी ए सी डी कांग्रेस पूर्व कार्यशाला 2017	3–4 नवम्बर, 2017 चण्डीगढ़	डॉ जे. एस. ठाकुर स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़
आपदा प्रबन्धन पर तृतीय विश्व कांग्रेस 2017 (3rd WCDM-2017)	6–10 नवम्बर, 2017 विशाखापट्टनम्	डॉ एस. आनन्द बाबू डिज़ास्टर मैनेजमेंट इनीशिएटिव ऐण्ड कंवरज़ेंस सोसाइटी (DMICS) हैदराबाद

चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी : प्रयोगशाला नैदानिकी में वर्तमान प्रगति पर कार्यशाला	7–13 नबम्बर, 2017 बिलासपुर	डॉ डी. एस. वी. जी. के. कलाधर बिलासपुर यूनिवर्सिटी बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
मस्तिष्क की रिकवरी के लिए अस्पताल में वास्तविक स्थिति और तंत्रिकाविज्ञान पर कार्यशाला	9–10 नवम्बर, 2017 कोइम्बटूर	सुश्री एस. निवेधा श्री कृष्णा कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान में पशु प्रयोग राष्ट्रीय संगोष्ठीः पर वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण	10–11 नवम्बर, 2017 आगरा	डॉ यू. डी. गुप्ता नेशनल जालमा इंस्टीट्यूट फॉर लेप्रोसी ऐण्ड अदर माइकोबैक्टीरियल डिसीसेज़ आगरा (यू. पी.)
भारत के लिए IOT सक्षम स्वास्थ्य सुरक्षा प्रौद्योगिकियों पर सेमिनार	11–12 नवम्बर, 2017 चेन्नई	डॉ वी. तुलसी बाई के. सी. जी. कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी चेन्नई
पब्लिक हेल्थ फाउण्डेशन ऑफ इंडिया तथा पैसिफिक बेसिन कंसोर्शियम पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	14–16 नवम्बर, 2017 नई दिल्ली	डॉ पूर्णिमा प्रभाकरन पब्लिक हेल्थ फाउण्डेशन ऑफ इंडिया गुड़गांव (हरियाणा)
आनुवंशिकी, जीनोमिक्स और वेंयक्तीकृत मेडिसिन पर विश्व कांग्रेस	15–17 नवम्बर, 2017 बेंगलुरु	डॉ वी. पी रॉव बायोजेनेसिस हेल्थ क्लस्टर बेंगलुरु
स्त्रीरोगविज्ञान और बाल रोग पर विश्व कांग्रेस, महिलाओं शिशु बालिका और ''सामाजिक और आर्थिक समानता'' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2017	15–17 नवम्बर, 2017 बेंगलूरु	डॉ वी. पी. रॉव बायो जेनेसिस हेल्थ क्लस्टर बेंगलूरु
सर्जरी के लिए मेडिकल रोबोट में ट्रेंडिंग प्रौद्योगिकी पर सेमिनार	16 नवम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ बी. शर्मिला श्री रामकृष्णा इंजीनियरिंग कॉलेज कोइम्बटूर
भारतीय मुखीय और मैक्सिलोफेशियल सर्जंस संघ की 42वीं वार्षिक कांग्रेस	16–18 नवम्बर, 2017 नागपुर	डॉ अभय एन. दत्तारकर गर्वनमेंट डेंटल कॉलेज ऐण्ड हॉस्पिटल, नागपुर (महाराष्ट्र)
अंतर दूर करना : चिकित्सीय सूक्ष्मजीवविज्ञान के क्षेत्र को विस्तारित करने पर सम्मेलनः MICROCON 2017	22–26 नवम्बर, 2017 रांची	डॉ मनोज कुमार राजेन्द्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ रांची (झारखण्ड)
बायोइंफॉर्मेटिक्स, फोरेंसिक और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग साइंसेज के भविष्य में एक कंप्यूटेशनल इंटेलीजेंस – नीतियां और नवाचार पर सेमिनार	23–24 नवम्बर, 2017 तिरुनेलवेली	डॉ एम. कैरोलाइन वायोला स्टेला मेरी फ्रेंसिस ज़ेवियर इंजीनियरिंग कॉलेज तिरुनेलवेली (तमिल नाडु)
ICPMN-2017 सार्वजनिक मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिकाविज्ञान पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	27–28 नवम्बर, 2017 मुम्बई	श्री राजेश टी. एस. सर्वसुमन एसोसिएशन बेंगलूरु
वायरलेस सेंसर नेटवर्क रिगार्डिंग स्ट्रक्चरल हेल्थ मॉनीटरिंग में एक बहुविषयक क्रियाशीलता पर राष्ट्रीय सेमिनार	27–28 नवम्बर, 2017 तिरुनेल्वेली	डी जी. राजाकुमार फ्रैंसिस ज़ेवियर इंजीनियरिंग कॉलेज तिरुनेलवेली (तमिल नाडु)
मलेरिया परजीवी की जैविकी औषधि और टीका विकास के लिए रणनीतियों पर अंतर्राष्ट्रीय वैक्सीन सम्मेलन और कार्यशाला	27 नवम्बर, से 1 दिसम्बर, 2017 नई दिल्ली	डॉ दिनकर एम. सालुंके इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग ऐण्ड बायोटेक्नोलॉजी नई दिल्ली

महिलाओं के स्वास्थ्य पर पर्यावरण के प्रभाव पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (IEWH-2017)	29 नवम्बर, से 1 दिसम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ माला त्रिवेदी एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, एमिटी यूनीवर्सिटी लखनऊ (यू. पी.)
रोगवाहक एवं पशुजन्य रोगों पर मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी पर 10वां राष्ट्रीय सम्मेलन	8–9 दिसम्बर, 2017 कोलकाता	डॉ डालिया मुखोपाध्याय आशुतोष कॉलेज कोलकाता
भारत में पुनर्वास इंजीनियरिंग एवं स्वास्थ्य सुरक्षा – वर्तमान स्थिति एवं भावी परिप्रेक्ष्य पर राष्ट्रीय सम्मेलन	4–5 जनवरी 2018, चिन्ना कोलम्बकम	श्री ए. कीर्तना कटपागा विनायगा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी चिन्ना कोलम्बकम कांचीपुरम (तमिल नाडु)
जैव कचरा प्रबंधन की रीसारक्लिंग पर वर्तमान प्रवृत्तियों पर संगोष्ठी	5 जनवरी, 2018 कोइम्बटूर	डॉ बी. शर्मिला श्री रामकृष्ण इंजीनियरिंग कॉलेज कोइम्बटूर
हाई इंपैक्ट रिसर्च स्किल्स पर रिसर्च सुपरवाइजर्स और रिसर्च स्कॉलर पर कार्यशाला	8–11 जनवरी, 2018 चेन्नई	डॉ एम. सी जोहन मिल्टन लायोला कॉलेज चेन्नई
क्लीनिकल प्रैक्टिस में संक्रमण और प्रतिरक्षा की उन्नत धारणाएं: ट्रांसलेशनल मेडिसिन पर प्रभाव पर पाठ्यक्रम	15–27 जनवरी, 2018 बैंगलौर	डॉ अन्नपूर्णा व्याकर्णम सेंट जांस मेडिकल कॉलेज सेंट जांस मेडिकल एकेडमी ऑफ हेल्थ साइंसेज़ बैंगलोर

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87